

# अनुपमा यात्रा

वर्ष: 03/ संस्करण: 01 पृष्ठ: 08/ मूल्य: 5 रुपये

भिवानी, शनिवार 10 जनवरी 2026

anupama.express@ammb.ac.in

महाविद्यालय की हॉकी व एथलेटिक्स टीम का शानदार प्रदर्शन

## स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक किए हासिल

दिनांक 6-7 दिसम्बर को भीम स्टेडियम, भिवानी में आयोजित सांसद खेल महोत्सव में महाविद्यालय की छात्राओं ने उत्कृष्ट खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय सफलता अर्जित की। इस प्रतियोगिता में हरियाणा की कुल 10 टीमों ने भाग लिया। महाविद्यालय की महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक प्राप्त कर संस्थान का नाम गौरवान्वित किया।

इसी खेल महोत्सव के अंतर्गत आयोजित एथलेटिक्स स्पर्धाओं में महाविद्यालय की छात्रा दिशा ने ट्रिपल जंप में स्वर्ण पदक तथा 4म400 मीटर रिले दौड़ में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। वहीं छात्रा शबनम ने 4म400 मीटर रिले दौड़ में रजत पदक प्राप्त किया। इन शानदार उपलब्धियों पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी विजेता खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है तथा इससे अन्य छात्राओं को भी खेलकूद गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए



प्रेरणा मिलेगी।

इस अवसर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग की समन्वयक डॉ. रेनु, विभागाध्यक्ष डॉ. मोनिका सैनी, प्राध्यापिका

नेहा तथा कोच सीता एवं भारती ने भी सभी खिलाड़ियों को इस शानदार उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दीं और उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

## छात्रा रिया ने ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर बढ़ाया संस्थान का मान

प्रतिभाशाली छात्रा कुमारी रिया ने अपनी अद्भुत प्रतिभा, कठोर परिश्रम एवं अनुशासन के बल पर ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैम्पियनशिप 'प्रहार टाइगर कप' में स्वर्ण पदक प्राप्त कर महाविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया है। यह राष्ट्रीय स्तर की ताइक्वांडो प्रतियोगिता दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें देशभर से आए खिलाड़ियों ने भाग लेकर अपनी-अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने छात्रा रिया की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि रिया की यह सफलता महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है तथा इससे अन्य छात्राओं को भी खेलकूद गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग की समन्वयक डॉ. रेनु, विभागाध्यक्ष डॉ. मोनिका सैनी, प्राध्यापिका नेहा तथा कोच सीता एवं भारती ने भी रिया को इस शानदार सफलता के लिए शुभकामनाएं



Name- Riya  
Class- B.A 2nd year  
Roll no.-933  
Position - Gold medal in taekwondo national championships

## 27 वर्षों के उपरांत महाविद्यालय में नियमित गैर-शिक्षक भर्ती, ऐतिहासिक उपलब्धि

आदर्श महिला महाविद्यालय में 27 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद गैर-शिक्षक वर्ग की नियमित भर्ती होना अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है। यह भर्ती महाविद्यालय के प्रशासनिक सुदृढीकरण एवं समग्र उन्नति की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगी।

इस नियमित भर्ती प्रक्रिया के अंतर्गत हेड क्लर्क, क्लर्क, स्वीपर, माली, एल.ए. ऑर्डरली, तबला प्लेयर, लाइब्रेरी अटेंडेंट, रेस्टोरर, स्टेनो सहित विभिन्न पदों पर नियुक्तियां की गई हैं। इस ऐतिहासिक भर्ती का श्रेय पूर्ण रूप से महाविद्यालय प्रबंधन समिति को जाता है जिनके सतत प्रयासों से यह प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न हो सकी।

नववर्ष के शुभ अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा सभी नवनियुक्त गैर-शिक्षक कर्मचारियों को कार्यभार ग्रहण करवाया गया। नियमित नियुक्ति पर ज्वाइन कर गैर-शिक्षक वर्ग में विशेष उत्साह एवं सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण देखने को मिला। इस अवसर पर सभी नवनियुक्त कर्मचारियों

ने महाविद्यालय प्रबंधन समिति एवं प्राचार्य के प्रति आभार व्यक्त किया।

महाविद्यालय प्रबंधन समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने बताया कि यह भर्ती प्रक्रिया लंबे समय से लंबित थी। कुछ समय पूर्व नियमित प्राचार्या के अभाव में इसे पूर्ण नहीं किया जा सका। अब नियमित प्राचार्य के कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात गैर-शिक्षक वर्ग की यह नियमित भर्ती संभव हो पाई है, जो निश्चित रूप से महाविद्यालय की प्रगति को नई दिशा प्रदान करेगी। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि शीघ्र ही शिक्षक वर्ग की नियमित भर्ती की प्रक्रिया भी प्रारंभ की जाएगी।

महाविद्यालय प्राचार्या ने नववर्ष पर सभी नवनियुक्त गैर-शिक्षक कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान करते हुए आशा व्यक्त की कि वे पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण भाव से कार्य करते हुए महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक उन्नति में सक्रिय योगदान देंगे।

## शैक्षणिक सत्र के दौरान विभिन्न एड-ऑन कोर्सेज का सफलतापूर्वक आयोजन

कौशल विकास सेल द्वारा शैक्षणिक सत्र के दौरान विभिन्न एड-ऑन कोर्सेज का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रत्येक एड-ऑन कोर्स 30 घंटे की संरचित शिक्षण अवधि का रहा। जिसका उद्देश्य छात्राओं के कौशल विकास के साथ उनकी रोजगार क्षमता को बढ़ाना है। कोर्स के अंत में परीक्षा आयोजित की गई तथा सफल प्रतिभागियों को ऑनलाइन प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

इन एड-ऑन कोर्सेज का मुख्य उद्देश्य यूजी एवं पीजी कक्षाओं की छात्राओं को नियमित अध्ययन के साथ-साथ व्यावहारिक एवं मूल्यवर्धित कौशल प्रशिक्षण प्रदान



करना है। इस वर्ष वोकल बेसिक म्यूजिक, संगीत वादन, प्रतियोगी परीक्षा तैयारी, शोध पद्धति, हेरिटेज टूरिज्म, पत्रकारिता, बागवानी एवं नर्सरी प्रबंधन, शोध पत्र लेखन (यूजी व पीजी कक्षाएं) जैसे पाठ्यक्रम संचालित किए गए। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. नूतन शर्मा, समन्वयक तथा

डॉ. ममता वाधवा, संयोजक, कौशल विकास सेल के समग्र निर्देशन में किया गया। उल्लेखनीय है कि यह एड-ऑन कोर्सेज का आयोजन लगातार तीसरे वर्ष सफलतापूर्वक किया गया। जो महाविद्यालय की छात्राओं के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

## आदर्श महिला महाविद्यालय में आयकर नियोजन पर व्याख्यान

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा महाविद्यालय में आयकर नियोजन विषय पर एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओं को वित्तीय साक्षरता एवं कर नियोजन से संबंधित जानकारी प्रदान करना रहा।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. आर. पी. तुलसियान, चैयरमैन, प्रमोशन ऑफ फाइनेंशियल लिटरेसी, दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल द्वारा अतिथि वक्ता का स्वागत करते हुए उन्हें पौधा भेंट कर किया गया।

डॉ. तुलसियान ने अपने व्याख्यान की शुरुआत प्राध्यापकों से संवादात्मक प्रश्नों के माध्यम से की। उन्होंने आयकर नियोजन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। जिसमें कर की कानूनी योजना, निवेश के उपयुक्त विकल्प, निवेश की सही दिशा तथा कर दायित्व को कम करने की प्रभावी रणनीतियां शामिल रहीं। उन्होंने आयकर नियोजन को कर कानूनों के अंतर्गत उपलब्ध कटौतियों, छूटों



एवं लाभों का उपयोग कर वित्तीय व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने की प्रक्रिया बताया। यह व्याख्यान अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी रहा। जिसमें सभी प्राध्यापकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के अंत में अतिथि वक्ता को उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं उपयोगी जानकारी प्रदान करने हेतु धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

## केमिस्ट्री विभाग के पवन कौशिक 38 वर्षों की सेवाओं के बाद सेवानिवृत्त

केमिस्ट्री विभाग में कार्यरत पवन कौशिक ने महाविद्यालय में अपनी 38 वर्षों की सफल, समर्पित एवं अनुकरणीय सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत्ति ग्रहण की। इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में एक सादे एवं भावपूर्ण विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने उनके योगदान को स्मरण करते हुए उन्हें सम्मानपूर्वक विदाई दी।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने पवन कौशिक के उज्वल सेवाकाल की सराहना करते हुए उनके भविष्य के लिए मंगलकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि अब उनका आगामी जीवन पूर्ण रूप से निजी एवं पारिवारिक होगा, जिसमें वे



अपने परिवारजनों के साथ समय व्यतीत कर सकेंगे तथा स्वयं के लिए भी समय निकाल पाएंगे। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं गैर-शिक्षक वर्ग ने भी पवन कौशिक को सेवानिवृत्ति की शुभकामनाएं देते हुए उनके स्वस्थ, सुखद एवं सफल भविष्य की कामना की।

## खेल-कूद में कीर्तिमान रचती भारतीय महिलाएँ

भारत में महिलाओं की स्थिति लंबे समय तक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बंधनों से सीमित रही, परंतु समय के साथ भारतीय महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और क्षमता का परिचय दिया है। विशेष रूप से खेल-कूद के क्षेत्र में भारतीय महिलाओं ने न केवल देश का नाम ही रोशन नहीं किया, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। आज भारतीय महिला खिलाड़ी ओलंपिक, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल और विश्व चैंपियनशिप जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कीर्तिमान रच रही हैं।



### भारतीय महिला खिलाड़ियों का संघर्ष और समर्पण

का सफर आसान नहीं रहा। उन्हें पारंपरिक सोच, आर्थिक तंगी, संसाधनों की कमी और सामाजिक दबाव जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

### वर्तमान की प्रमुख भारतीय महिला खिलाड़ियों में

पी. टी. उषा (एथलेटिक्स) रही है। जिन्हें २३५० मीटर की दूरी पर जीता है। इन्होंने ओलंपिक में ४०० मीटर बाधा दौड़ में चौथा स्थान प्राप्त किया और एशियाई खेलों में कई स्वर्ण पदक जीतकर भारत का गौरव बढ़ाया। मेरी कॉम मुक्केबाजी खेल से संबंधित है। मेरी कॉम भारत की सबसे प्रसिद्ध वह महिला बॉक्सर हैं, जो ६ बार विश्व चैंपियन रही हैं। ओलंपिक कांस्य पदक और कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिताब अपने नाम किये हैं। गरीब परिवार से आने वाली मेरी कॉम का नाम मुक्केबाजी के क्षेत्र में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है और आज वह लाखों लड़कियों के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं। सानिया नेहवाल भी भारत की सफलतम बैडमिंटन महिला खिलाड़ी हैं। नेहवाल राष्ट्रमंडल खेलों में दो एकल स्वर्ण पदक (२०१० और २०१८) जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। पी. वी. सिंधु (बैडमिंटन) ने भी ओलंपिक में दो पदक जीते हैं। २०१६ रियो ओलंपिक में रजत पदक और २०२० टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक, खेल के क्षेत्र में दो ओलंपिक पदक जीतने वाली वह पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं। इस तरह नेहवाल और पी. वी. सिंधु की अपार सफलता ने बैडमिंटन को भारत में लोकप्रिय बनाया। हरियाणा की साक्षी मलिक और बबीता फौगाट भी भारत की पहली महिला कुश्ती खिलाड़ी बनीं। इन्होंने ओलंपिक में पदक जीता और यह साबित कर दिखाया कि महिलाएँ ताकत और हौंसले में किसी से कम नहीं हैं। मिताली राज भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान रही हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कई रिकॉर्ड बना कर महिला क्रिकेट को एक नई पहचान दी। इनके साथ

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए खेल सुविधाएँ सीमित थीं। परिवारों में यह धारणा प्रचलित थी कि खेल लड़कियों के लिए नहीं हैं। इसके बावजूद कई साहसी महिलाओं ने अपने सपनों को साकार किया। मेहनत, अनुशासन और आत्मविश्वास के बल पर इन खिलाड़ियों ने यह साबित कर दिया कि महिलाएँ भी किसी से कम नहीं हैं।

झुलन गोस्वामी भी सर्वाधिक विकेट लेने वाली महिला क्रिकेट गेंदबाज बनीं। इसी तरह जिमनास्टिक में दीपा कर्माकर वह पहली भारतीय महिला जिमनास्टिक बनीं। जिन्होंने अपने कठिन प्रयास व कौशल से शू प्रोडुनोवा वोल्ट शू से विश्व को चकित कर दिया। इसी तरह हिमादास ने भी एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतकर भारत का गौरव बढ़ाया। भारत की स्टार शूटर और पेरिस ओलंपिक में २ मेडल जीतने वाली मनु भाकर ने भी भारत के सम्मान को शीर्ष तक पहुँचा दिया है। आज भारत में महिलाएँ क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, कुश्ती, बॉक्सिंग, शूटिंग, एथलेटिक्स, भारोत्तोलन जैसे खेलों में अपनी सक्रियता को दर्ज करा रही हैं। सरकार द्वारा खेले इंडिया, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने भी लड़कियों को आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर दिया है। महिला खिलाड़ियों के बढ़ते इस प्रभाव और सफलता ने समाज को प्रभावित किया और समाज की सोच बदल दी है। परिणामस्वरूप आज लड़कियों को खेलने की आजादी माता-पिता के समर्थन के साथ मिल रही है। शिक्षा के साथ खेलों का महत्व आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ा रहा है। अब बेटियाँ केवल घर तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि देश का प्रतिनिधित्व कर विश्व में भी अपना लोहा मनवा रही हैं। खेल-कूद के क्षेत्र में रचा यह कीर्तिमान उनके संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास का परिणाम है जो आने वाले समय में और भी ऊँचाइयों को छूने का विश्वास रखता है। -जहाँ चाह, वहाँ राह- की कहावत को भारतीय महिला खिलाड़ियों ने सच कर दिखाया है। निश्चय ही महिला सशक्तिकरण की यह सशक्त मिसाल सामाजिक दृष्टिकोण को सकारात्मक बना रही है।

## राजनीति में महिला सशक्तिकरण

लोकतंत्र की सफलता समान भागीदारी पर निर्भर करती है। जिसकी नीति-निर्माण की प्रक्रिया में समस्त नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान भागीदारी के अवसरों का मिलना सुनिश्चित होता है, लेकिन जब समाज की आधी-आबादी-महिलाएँ, राजनीति में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं पाती हैं, तो यह निर्णय-निर्माण अधूरा रह जाता है। राजनीति में महिला सशक्तिकरण का अर्थ है- महिलाओं को राजनीति प्रक्रियाओं में समान अवसर अधिकार और नेतृत्व प्रदान करना, ताकि शासन अधिक न्यायपूर्ण, संवेदनशील व समावेशी बने। सशक्तिकरण का अर्थ और महत्व केवल संख्या बढ़ाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह नेतृत्व निर्णय-क्षमता और प्रभाव से जुड़ा हुआ है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, बाल-कल्याण, सामाजिक-न्याय और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर नीतियाँ अधिक प्रभावी बनती हैं। इन महत्वपूर्ण व समावेशी निर्णयों से समाज व राष्ट्र का बेहतर विकास संभव है। इस तरह के कानूनी निर्णय लोकतंत्र की गुणवत्ता में सुधार को बढ़ावा देते हैं। हालाँकि महिला सशक्तिकरण का इतिहास भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पुरुषों के समान बराबरी का अधिकार वैदिक काल की ही देन है, जिसने विवाह जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों को स्त्री की हाँ या ना पर छोड़ दिया जाता था। इतना ही नहीं पुरुषों के समान उसकी सहचरी बनकर समाज को समगति देने का

कार्य करती रही है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि - पति पत्नी च यते सह पठतः (धार्मिक और शैक्षिक अनुष्ठानों में समान भागीदारी) व जाया, भार्या, माता, जननी (जैसे नाम स्त्रियों के महत्व व परिवार में केन्द्रीय भूमिका) संस्कृत के ये वाक्य और भाव नारी की स्वतंत्रता, शिक्षा और सामाजिक स्थान को स्पष्ट करते हैं, हालाँकि प्रत्यक्ष राजनीति कम थी, किन्तु फिर भी सभाओं और समितियों व दार्शनिक चर्चाओं में भाग लेना उनके सशक्तिकरण का प्रमाण है। मध्यकाल में स्त्री स्थिति में गिरावट रही लेकिन रानी लक्ष्मी बाई, नूरजहाँ, झलकारी बाई जैसी महिलाएँ राजनीति में सक्रिय रही। यही सक्रियता स्वतंत्रता संग्राम के समय भी नजर आती है। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली जैसी नेताओं ने अपना सफल नेतृत्व दिया। किंतु इस सफल नेतृत्व के बाद भी राजनीति क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही। समय के साथ भारतीय संविधान के मूल में हिन्दू कोड बिल (१९५०) जैसे बिल ने महिला विकास की समानता, स्वतंत्रता, अधिकार पद व स्थान को जमीनी जामा पहना दिया। अब महिलाओं की भागीदारी पंचायती राज में सुनिश्चित कर दी गई। जिससे महिला का कुशल नेतृत्व उभर कर सामने आया। लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए सीटों को आरक्षित किया गया। कानूनी सुधार प्रभावी ढंग से लागू होने लगे। कानून के समान संरक्षण व प्रतिष्ठा एवं अवसर की समता की सुनिश्चितता के माध्यम से

पुरुषों के समान सहभागिता का समान अवसर मिला। महात्मा गांधी जी का मानना था कि - शिस्त्रियों में स्व-बलिदान और सहिष्णुता का एक बड़ा भाग है, जो उनका गुण है और उनमें दुःखों को झेलने की वह योग्यता भी है, जिसकी अहिंसात्मक संघर्ष के लिए आवश्यकता है। शू यह न्यायोचित व मानवीय सामाजिक व्यवस्था का सकारात्मक परिणाम है, जिसने एशियाई देशों की अपेक्षा भारत के बेहतर लोकतांत्रिक ढाँचे को मजबूत बनाया। लोकतंत्र की गुणवत्ता में यह सुधार महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाता है। जिसने महिलाओं के सम्मान, समानता सुरक्षा जैसे कई मुद्दों पर अपनी प्रभावी नीतियाँ बनाई गईं। लोकतंत्र की इस पारदर्शिता ने श्रीमती इंदिरा गांधी जी को भारत की राजनीति में एक सफल प्रधानमंत्री बनने का मौका दिया। जिसने अपने नेतृत्व के के दम पर अपनी कुशल व सफल राजनीति का लोहा विदेशों तक मनवा दिया था। हालाँकि सत्ता की राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति कम ही रही है, जिसमें गिनी-चुनी महिलाओं ने ही राजनीति में इस हद तक की सफलता हासिल की है।

वर्तमान राजनीति में देखा जाए तो द्रौपदी मुर्मू, सोनिया गांधी, मेनका गांधी, आनंदी बेन पटेल, वसुंधराराजे, उमा भारती, मायावती, सुमित्रा महाजन, निर्मला सीतारमण, ममता बनर्जी, प्रियंका गांधी, सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित, महबूबा मुफ्ती, जयललिता जैसी महिला नेताओं की सक्रिय भूमिका राजनीति क्षेत्र में में शानदार रही है। प्रथम आईपीएस अधिकारी किरण बेदी भी अपने अनुशासनात्मक व सख्त रवैये से काफी चर्चित रही हैं। इनके अतिरिक्त आईसीआईसीआई की सीईओ चंदा कोचर व एसबीआई की प्रमुख अरूंधती भट्टाचार्य आदि महिलाओं की सफल भूमिका महिला सशक्तिकरण के मजबूत उदाहरण हैं। जिनके योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। यद्यपि मौजूदा महिला आरक्षण (५० प्रतिशत) संबंधी प्रावधान जमीनी स्तर पर बड़ा परिवर्तन है, जो संसद, विधानसभाओं में महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही नारी शक्ति वंदन अधिनियम (२०२३) एक ऐसा ऐतिहासिक कदम है, जिसे महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया है। वस्तुतः महिलाओं को राजनीतिक सशक्तिकरण केवल महिला अधिकारों से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास में मानवाधिकारों की सांख्यिक घोषणा को प्रस्तुत करता है।

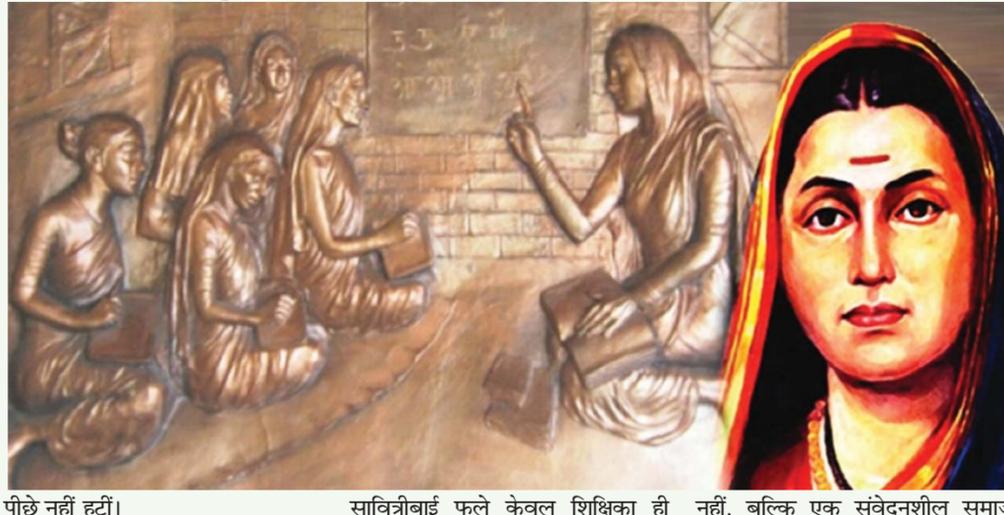
मिस. मीनाक्षी (सहायक प्रोफेसर) हिंदी विभाग



महिलाओं को भी

## सावित्रीबाई फुले : नारी शिक्षा की प्रथम ज्योति

सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारक और नारी सशक्तिकरण की महान प्रतीक थीं। उनका जन्म ३ जनवरी १८३१ को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ। उस समय समाज में महिलाओं और दलित वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, लेकिन सावित्रीबाई फुले ने इन रूढ़ियों को तोड़कर शिक्षा की अलख जगाई। उन्होंने अपने पति महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर १८४८ में पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय स्थापित किया। यह कार्य उस समय अत्यंत साहसिक था, क्योंकि समाज में इसका कड़ा विरोध हुआ। रास्ते में उन पर कीचड़ और पत्थर फेंके गए, फिर भी वे प्रतिदिन अतिरिक्त साड़ी साथ लेकर विद्यालय जाती थीं और अपने कर्तव्य से



पीछे नहीं हटीं।

सावित्रीबाई फुले केवल शिक्षिका ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील समाज

सुधारक भी थीं। उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा और लूआच्छूत जैसी कुप्रथाओं का विरोध किया। विधवाओं के पुनर्विवाह और उनके सम्मानजनक जीवन के लिए उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने अनेक प्रेरणादायक कविताएँ भी लिखीं, जिनमें शिक्षा और समानता का संदेश निहित है।

१८९७ में जब प्लेग महामारी फैली, तब सावित्रीबाई फुले ने बीमारों की सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उनका जीवन त्याग, करुणा और साहस का अनुपम उदाहरण है।

सावित्रीबाई फुले का जीवन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा ही समाज परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है। वे आज भी प्रत्येक छात्रा और महिला के लिए प्रेरणा की अमर ज्योति हैं।

# Life Without Mobile Phones: A Thought

Mobile phones have become an inseparable part of our daily lives. From communication to education, entertainment to online payments, everything revolves around a small device. Imagining life without mobile phones feels almost impossible today, yet it gives us an opportunity to reflect on how dependent we have become on technology.

Life without mobile phones would be slower but more meaningful. People would interact face to face rather than through screens. Families would sit together, talk more, and build stronger emotional bonds. Students would focus better on their studies without constant notifications and distractions. Mental peace would improve as stress caused by social media comparison and digital overload would reduce.

However, such a life would not be free from challenges. Communication would take more time, emergencies would be difficult to handle, and access to infor-

## Failure: The First Step Towards Success

Failure is often viewed as the end of the road, but in reality, it is the beginning of success. Every successful person has faced failure at some point in life. Failure teaches lessons that success never can.

Failure helps us understand our weaknesses and encourages us to improve. It builds patience, determination, and resilience. Instead of discouraging us, failure motivates us to work harder and smarter. Many inventions and achievements were possible only after repeated failures.

Great leaders, scientists, and entrepreneurs failed numerous times before achieving success. Their failures shaped their journey and strengthened their character. Without failure, growth and progress are impossible.

In conclusion, failure should not be feared or avoided. It should be accepted as a learning experience. When we treat failure as a stepping stone rather than a setback, success becomes inevitable. Truly, failure is the first step towards success.



## Power of Positive Thinking

Positive thinking is the ability to focus on the brighter side of life even during difficult situations. It does not mean ignoring problems but facing them with hope, confidence, and determination. A positive mindset has the power to transform challenges into opportunities.

People who think positively are more resilient and mentally strong. They believe in their abilities and do not give up easily. Positive thinking improves mental health, reduces stress, and increases self-confidence. It also helps in building better relationships, as optimistic people spread motivation and encouragement wherever they go.

Moreover, positive thinking plays a crucial role in achieving success. Many great personalities achieved their goals because they believed in themselves despite failures and criticism. A positive attitude attracts success, happiness, and inner peace.

To conclude, the power of positive thinking lies in its ability to shape our thoughts and actions.

When the mind is positive, the path to success becomes clearer. As the saying goes, "A positive mind can create a positive life."

mation would be limited. Many professions that depend on mobile technology would face setbacks.

In conclusion, life without mobile phones would teach us balance. While mobile phones are a necessi-

ty in modern life, their excessive use has distanced us from real relationships. The thought of living

without them reminds us that technology should serve humanity, not control it.

## Junk Food: A Growing Health Concern

Junk food refers to food items that are high in sugar, salt, unhealthy fats, and calories but low in nutritional value. Fast food, packaged snacks, sugary drinks, and instant meals have become extremely popular, especially among children and youth, due to their taste, convenience, and attractive advertisements.

One of the main reasons for the increasing consumption of junk food is the fast-paced lifestyle of modern society. Busy schedules leave little time for preparing home-cooked meals, making junk food an easy option. However, regular intake of junk food leads to serious health problems such as obesity, diabetes, heart disease, and poor digestion. It also weakens immunity and affects overall growth and development.

Junk food not only harms physical health but also impacts mental well-being. Excessive consumption can cause lack of concentration, fatigue, and mood swings. Children who rely heavily on junk food often show poor academic performance and low energy levels.

Despite its harmful effects, junk food can be avoided through awareness and self-discipline. Encouraging healthy eating habits, choosing fruits, vegetables, and homemade meals, and limiting the intake of processed foods are essential steps towards a healthy lifestyle.

In conclusion, while junk food may be tasty and convenient, its long-term effects are dangerous. A balanced diet and healthy food choices are the key to a fit body and a healthy mind. As the saying goes, "Health is wealth."



## Key Global and National Updates

**1. Q:** Which Indian state became the most visited in 2025?

**A:** Uttar Pradesh was India's most visited state in 2025, attracting over 137 crore domestic tourists and 3.66 lakh foreign visitors, largely due to the Maha Kumbh and heritage tourism boom.

**2. Q:** What major cultural event drew millions in Uttar Pradesh in 2025?

**A:** The 2025 Prayag Maha Kumbh Mela—where more than 660 million (66 crore) pilgrims participated—making it one of the largest religious gatherings in history.

**3. Q:** What significant mock drill was conducted in India in 2025?

**A:** India carried out a nationwide civil defence exercise called Operation Abhyaas to prepare civilians and response agencies for emergency scenarios.

**4. Q:** What new employment law did India pass in 2025?

**A:** The Viksit Bharat Guarantee for Rozgar and Ajeevika Mission (Gramin) Act\* was given presidential assent, replacing MGNREGA with expanded rural employment guarantees.

**5. Q:** Which festival was inscribed on UNESCO's Intangible Cultural Heritage list in 2025?

**A:** Diwali was officially added to the UNESCO Representative List of the Intangible Cultural Heritage of



Humanity.

**6. Q:** Which global economic forum was hosted by South Korea in 2025?

**A:** APEC 2025 (Asia-Pacific Economic Cooperation) Summit was held in Gyeongju, South Korea, focusing on sustainable economic cooperation.

**7. Q:** What major NATO event took place in 2025?

**A:** The 2025 NATO Summit was held in The Hague, the first such meeting hosted by the Netherlands, discussing defence spending and global security cooperation.

**8. Q:** What significant rights milestone happened in Thailand?

**A:** Thailand became the first Southeast Asian country to legalize same-sex marriage, granting equal legal and financial rights to LGBTQ+ couples.

**9. Q:** What environmental record was set in 2025?

**A:** 2025 was one of the three hottest years on record, with global temperatures crossing the 1.5°C threshold of the Paris Agreement.

**10. Q:** What controversial political

invitation was newsworthy in 2025?

**A:** Germany's far-right AfD party was invited to the Munich Security Conference 2026, reversing previous exclusion policies.

**11. Q:** What ranking did India achieve in the global economy in 2025?

**A:** India overtook Japan (and economically surpassed California) to become the world's fourth-largest economy.

**12. Q:** What major technology summit did India plan to host in early 2026?

**A:** The AI Impact Summit / IndiaAI Summit was announced, to be inaugurated by PM Narendra Modi with global tech leaders attending.

**13. Q:** Which two major defence & trade pacts did India finalize in 2025?

**A:** India signed a 10-year Defence & Security Framework Agreement with the USA and also concluded the India-UK Free Trade Agreement

**14. Q:** Which airline faced major operational disruptions in late 2025?

**A:** IndiGo cancelled 2,100+ flights due to pilot rest-time regulation issues and software challenges.

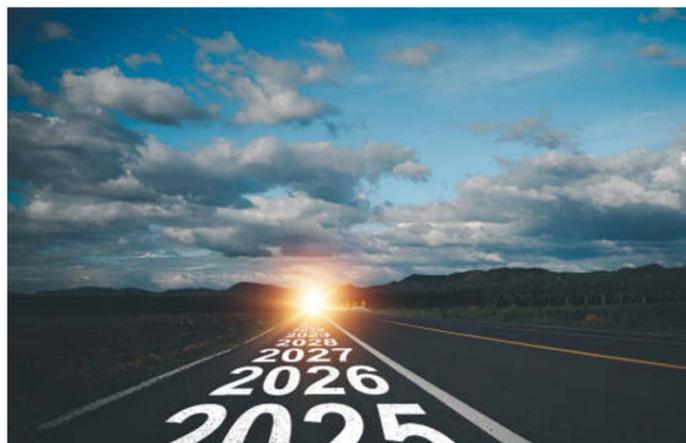
**15. Q:** What space advancement did ISRO test in 2025?

**A:** ISRO conducted parachute system tests for its Gaganyaan human space mission.

# 2025: What We Gained and What We Lost

The year 2025 represents a rapidly changing world shaped by technology, globalization, and modern lifestyles. While progress has brought comfort and innovation, it has also introduced new challenges. Understanding the pros and cons of 2025 helps us evaluate whether development is truly improving human life.

One of the greatest advantages of 2025 is technological advancement. Artificial Intelligence, digital education, online banking, and smart devices have made life faster and more efficient. Information is easily accessible, communication is instant, and opportunities for learning and employment have



expanded beyond geographical boundaries. Healthcare has also

improved with better diagnostic tools and telemedicine, saving time

and lives.

Another positive aspect is increased awareness. People are more conscious about mental health, gender equality, environmental protection, and personal growth. Remote work and flexible schedules have provided better work-life balance for many individuals.

However, 2025 also has its drawbacks. Excessive dependence on technology has reduced real human interaction. Mobile addiction, screen time, and social media pressure have negatively affected mental health, especially among the youth. Despite technological growth, unemployment remains a

serious issue due to automation replacing human jobs.

Environmental problems are another major concern. Pollution, climate change, and depletion of natural resources continue to threaten life on Earth. Moreover, the fast-paced lifestyle has increased stress, competition, and loneliness.

In conclusion, 2025 is a mix of progress and problems. While technology and awareness have improved our quality of life, imbalance and over-dependence have created new challenges. The real success of 2025 lies not in advancement alone but in using development wisely and responsibly for a better future.

छात्रा मुनेश व नीशु ने हरियाणा स्टेट जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में रजत व कांस्य पदक जीता



छात्राएँ कुमारी मुनेश एवं नीशु ने अपनी अद्भुत खेल प्रतिभा, अनुशासन एवं कठिन परिश्रम के बल पर 38वीं हरियाणा स्टेट जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर महाविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया है। यह प्रतिष्ठित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हरियाणा एथलेटिक्स खेल संगठन द्वारा करनल

स्टेडियम, करनल में आयोजित की गई, जिसमें प्रदेशभर से खिलाड़ियों ने भाग लेकर अपनी-अपनी खेल क्षमता का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए छात्रा मुनेश ने रजत पदक तथा नीशु ने कांस्य पदक हासिल किया। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने दोनों खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

## राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर महाविद्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन



जिला निर्वाचन कार्यालय, भिवानी के निर्देशानुसार राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में वोटर इलेक्ट्रॉनल सेल द्वारा एक प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवा मतदाताओं में लोकतांत्रिक मूल्यों, मतदान के अधिकार तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना रहा। कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय की विभिन्न संकायों से छात्राओं ने बड़-चढ़कर भाग लिया। रंगोली, भाषण एवं निबंध लेखन जैसी रचनात्मक

एवं बौद्धिक प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं का विषय 'समावेशी, सुगम एवं सहभागी निर्वाचन की ओर अग्रसर' रखा गया, जिस पर छात्राओं ने अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

प्रतियोगिताओं के परिणामों में रंगोली प्रतियोगिता में छात्रा आशा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, भाषण प्रतियोगिता में छात्रा वशिका प्रथम रही, जबकि निबंध लेखन प्रतियोगिता में छात्रा पूजा ने प्रथम स्थान हासिल कर अपनी



प्रतिभा का परिचय दिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विजेता छात्राओं को बधाई दी गई तथा सभी प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता की सराहना की गई।

## मकर संक्रांति: पर्व, परंपरा और महत्व



मकर संक्रांति भारत के प्रमुख और पवित्र त्योहारों में से एक है। यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं और उत्तरायण का आरंभ होता है। मकर संक्रांति उन गिने-चुने त्योहारों में से है जो निश्चित तिथि पर मनाए जाते हैं।

### सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व

मकर संक्रांति मुख्यतः फसल का पर्व है। यह किसानों के परिश्रम और प्रकृति की कृपा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है। भारत के विभिन्न राज्यों में यह

पर्व अलग-अलग नामों से मनाया जाता है-

तमिलनाडु में पोंगल, गुजरात में उत्तरायण, पंजाब में लोहड़ी, असम में माघ बिहू और उत्तर प्रदेश में खिचड़ी पर्व के रूप में।

इस दिन पतंग उड़ाना, अलाव जलाना, तिल-गुड़ के व्यंजन बनाना और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देना परंपरा है। पतंग उड़ाना आनंद, उत्साह और स्वतंत्रता का प्रतीक माना जाता है।

### धार्मिक महत्व

धार्मिक दृष्टि से मकर संक्रांति का विशेष महत्व है। इस दिन गंगा, यमुना जैसी पवित्र नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।



दान-पुण्य का विशेष महत्व है। तिल, गुड़, वस्त्र और अन्न का दान शुभ माना जाता है।

**वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य महत्व**  
मकर संक्रांति का वैज्ञानिक महत्व भी है। इस समय सूर्य की दिशा

परिवर्तन से ऋतु परिवर्तन होता है। सर्दी के मौसम में तिल और गुड़ का सेवन शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

### नैतिक संदेश

यह पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। आपसी प्रेम, सद्भाव और सहयोग का संदेश देता है।

### उपसंहार

मकर संक्रांति केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और जीवन के संतुलन का उत्सव है। यह पर्व समाज में आनंद, समृद्धि और एकता का संचार करता है।

## बसंत पंचमी: ज्ञान, उल्लास और नवचेतना का पर्व

बसंत पंचमी भारत के प्रमुख सांस्कृतिक और धार्मिक त्योहारों में से एक है। यह पर्व हर वर्ष माघ मास की शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है और ऋतु परिवर्तन का प्रतीक है। इस दिन शीत ऋतु के अंत और बसंत ऋतु के आगमन का



उल्लास पूरे वातावरण में दिखाई देता है। बसंत पंचमी का धार्मिक महत्व अत्यंत विशेष है। इस दिन माँ सरस्वती, जो ज्ञान, विद्या, कला और संगीत की देवी हैं, की पूजा की जाती है। विद्यार्थी इस दिन अपनी पुस्तकों और वाद्य यंत्रों की पूजा कर ज्ञान और बुद्धि की कामना करते हैं। कई स्थानों पर बच्चों की शिक्षा का शुभारंभ भी इसी दिन किया जाता है।

सांस्कृतिक रूप से बसंत पंचमी हर्ष और उमंग का पर्व है। लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं, घरों में पीले रंग के पकवान जैसे केसरिया खीर और मीठे चावल बनाए जाते हैं। खेतों में सरसों के पीले फूल लहराते दिखाई देते हैं, जो समृद्धि और खुशहाली का संदेश देते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से बसंत पंचमी ऋतु परिवर्तन का संकेत देती है। इस समय वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और मनुष्य में नई स्फूर्ति का अनुभव होता है।

उपसंहारतः, बसंत पंचमी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि ज्ञान, सौंदर्य और जीवन के नवउत्साह का प्रतीक है। यह पर्व हमें ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर होने और जीवन में सकारात्मकता अपनाने की प्रेरणा देता है।

## लोहड़ी: लोकसंस्कृति और जीवन का उत्सव

लोहड़ी उत्तर भारत का एक प्रमुख लोकपर्व है, जिसे विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा में बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व हर वर्ष 13 जनवरी को मनाया जाता है और शीत ऋतु के अंत तथा नई फसल के आगमन का संकेत देता है। लोहड़ी प्रकृति, परिश्रम और सामूहिक जीवन का उत्सव है।

लोहड़ी के दिन सायंकाल लोग खुले स्थान पर अलाव जलाते हैं। अलाव के चारों ओर घूमते हुए लोकगीत गाए जाते हैं और ढोल की थाप पर भांगड़ा व गिद्धा किया जाता है। अग्नि को साक्षी मानकर लोग तिल, मूँगफली और रेवड़ी अर्पित करते हैं तथा सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

इस पर्व का सामाजिक महत्व अत्यंत विशेष



है। लोहड़ी लोगों को आपसी भेदभाव भूलकर एक-दूसरे से जोड़ती है। नवविवाहित दंपति और नवजात शिशुओं के लिए यह पर्व विशेष आनंद का अवसर होता है। लोककथाओं में दुष्प्र भट्टी को साहस और मानवता के प्रतीक के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लोहड़ी का महत्व है। तिल और गुड़ जैसे पारंपरिक खाद्य पदार्थ सर्दियों में शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। लोहड़ी केवल अग्नि और गीतों का पर्व नहीं, बल्कि सामूहिकता, कृतज्ञता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। यह पर्व जीवन में उत्साह, आशा और नई शुरुआत का संदेश देता है।

# Principles of Entrepreneurship

## A Complete Guide

Entrepreneurship is truly an excellent form of guidance that provides direction and valuable advice to anyone starting a new business. Each point mentioned here plays an important role in building a successful enterprise. Let us understand them in detail:

### ❑ Idea and Research

#### Problem Solving:

Every business begins with solving a problem. If you can provide a solution to a problem that troubles people, customers will naturally come to you.

#### Market Research:

This is the most crucial step. Understanding the demand for your product or service ensures that you are moving in the right direction. Studying competitors also helps you identify how to make your business better.

#### USP (Unique Selling Proposition):

Your USP is what makes you different from others. It is the key factor that makes your product or service stand out and attract customers in the market.

### ❑ Create a Business Plan

#### Product/Service Description:

Clearly and concisely describe the product or service you are offering. It should be appealing to potential customers.

#### Target Market and Marketing Strategy:

Define who will buy your product or service and how you will promote it.

#### Investment, Cost, Profit, and Growth Plan:

Accurate financial planning helps determine the financial health of the business and guides when and how the business will become profitable and expand.



Short-term and Long-term Goals: Short-term goals show daily progress, while long-term goals provide vision and direction.

### ❑ Legal Registration

#### Business Structure:

Decide whether your business will operate as a Sole Proprietorship, Partnership, or Private Limited Company. This defines your rights and responsibilities.

#### Required Registrations:

PAN and GST registration for business identity and tax compliance MSME (Udyam Registration) to access government benefits, subsidies, and credit facilities Startup India registration to avail government schemes and incentives

### ❑ Funding and Financial Management

#### Self-funding / Family Support:

Initial investment often comes from personal savings or family support, but expense management is essential.

#### Bank Loan / Mudra Loan:

Government schemes and bank loans, such as the Mudra Loan, are excellent options for small businesses.

#### Angel Investors / Venture Capital:

These are investors willing to invest in new and growing businesses.

#### Expense Control:

A proper accounting system and financial discipline help maintain business stability.

### ❑ Team and Skills

#### Choosing the Right People:

A strong team increases the chances of business success.

#### Roles and Responsibilities:

Clear responsibilities improve work

quality and timely execution.

### Continuous Learning and Skill Development:

Entrepreneurship requires constant learning. Updating skills according to market changes is crucial.

### ❑ Product Development

#### Minimum Viable Product (MVP):

Launch a basic version of the product with minimal resources to understand market response, then improve it.

#### Customer Feedback:

Customer feedback is extremely valuable and should be used to improve the product.

#### Quality and Innovation:

Maintaining quality and innovation strengthens the brand and encourages customer loyalty.

### ❑ Marketing and Branding

#### Digital Marketing:

Social media and websites are powerful tools for modern businesses. Strategies like SEO, social media campaigns, and email marketing are highly effective.

#### Branding and Logo:

Your brand and logo represent your business identity and help build trust.

#### Customer Trust and Satisfaction:

Customer trust is the greatest asset of any business. Providing quality products and excellent service is essential.

### ❑ Benefits of Government Schemes

Startup India, Stand-Up India, PM Mudra Yojana:

These schemes provide financial assistance, government-backed loans, and other support for small and medium enterprises.

#### Tax Benefits and Incubation Support:

Many schemes offer tax exemptions and incubation support, which can significantly help business growth.

### ❑ Risk and Patience

#### Profits May Be Slow Initially:

Do not expect high profits in the beginning. Patience and consistent effort are key.

#### Learn from Failures:

Failures provide valuable lessons and strengthen future decisions.

#### Maintain Consistency and Patience:

Consistency and patience are the most important qualities on the path to success.

#### Success Mantra

“Small steps, big dreams, and continuous hard work” — this is the core mantra. Any entrepreneur who follows it will not only achieve success but also take their business to new heights.

## Government of India Facilities & Schemes for Entrepreneurs



### 1. Startup India Initiative

Legal recognition for startups  
Income tax exemption for up to 3 years  
Simplified compliance process  
Mentorship and incubation support

### 2. Stand-Up India Scheme

For women and SC/ST entrepreneurs  
Loans ranging from ₹10 lakh to ₹1 crore  
Applicable for Manufacturing, Service, and Trading sectors

### 3. Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY)

Collateral-free loans

Categories:

Shishu – up to ₹50,000

Kishore – up to ₹5 lakh

Tarun – up to ₹10 lakh

### 4. MSME / Udyam Registration

Government recognition for small enterprises  
Easier access to bank loans  
Priority in subsidies and government tenders

### 5. Skill India Mission

Skill training for entrepreneurs  
Entrepreneurship Development Programs (EDPs)

Promotion of self-employment

### 6. Credit Guarantee Scheme

Collateral-free loans for small entrepreneurs  
Government-backed security to banks

### 7. Digital India Initiative

Online business registration

Promotion of digital payments

Support for e-commerce and technology adoption

### 8. Make in India

Promotion of the manufacturing sector

Simplified regulations and encouragement of foreign investment

### 9. Women Entrepreneurship Schemes

For women entrepreneurs:

Low-interest loans

Training and mentorship

Market linkage support

## संघर्ष से सफलता तक - एक महिला उद्यमी की उड़ान

साल 2026 में भारत की सफल व्यवसायी महिलाओं में अनन्या शर्मा का नाम गर्व से लिया जाता है। अनन्या एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से थीं, जहाँ संसाधन सीमित थे, लेकिन सपने और उम्मीदें अनंत थीं।

**शुरुआत:** अनन्या ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद महसूस किया कि महिलाओं के लिए घर बैठे रोजगार के अवसर बहुत सीमित हैं। इसी सोच ने उन्हें वर्ष 2022 में एक छोटे से विचार के साथ अपना नवोद्यम (स्टार्टअप) शुरू करने का हौसला दिया –

महिलाओं द्वारा संचालित हस्तनिर्मित एवं पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद।

शुरुआत में उनके पास न तो बड़ा निवेश था और न ही कोई टीम। मात्र ₹25,000 की पूंजी, एक लैपटॉप और आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अपनी उद्यम यात्रा शुरू की।

### चुनौतियाँ:

**परिवार और समाज का दबाव:** एक महिला को व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ते देख समाज में अक्सर संदेह किया जाता है। अनन्या को भी इस मानसिकता का सामना करना पड़ा।

**पूँजी की कमी:** शुरुआती दिनों में धन जुटाना और सही निवेशक ढूँढना एक बड़ी चुनौती थी।

**बाजार में पहचान बनाना:** प्रारंभिक ग्राहकों तक पहुँचना और अपने ब्रांड की पहचान स्थापित करना आसान नहीं था।

**प्रौद्योगिकी की सीमित जानकारी:** हालाँकि अनन्या को तकनीकी ज्ञान सीमित था, फिर भी उन्होंने डिजिटल विपणन और ऑनलाइन मंचों का प्रभावी



### उपयोग करना सीखा।

लेकिन अनन्या ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने डिजिटल विपणन, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, और सरकारी योजनाओं (जैसे स्टार्टअप इंडिया एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम योजना) का सही उपयोग किया, जिससे उन्हें न केवल आर्थिक सहायता मिली बल्कि एक मजबूत मंच भी प्राप्त हुआ।

### सफलता की उड़ान

साल 2026 तक अनन्या का नवोद्यम:

>> भारत के 15 राज्यों में सक्रिय

>> 5000 से अधिक महिलाओं को रोजगार

>> वार्षिक कारोबार ₹10 करोड़ से

### अधिक

>> राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

उनकी कंपनी ने यह सिद्ध कर दिया कि महिला सशक्तिकरण और व्यवसाय एक साथ आगे बढ़ सकते हैं। अनन्या की मेहनत और सफलता यह प्रमाण है कि सही दिशा और दृढ़ संकल्प से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है।

### प्रेरणा

आज अनन्या केवल एक व्यवसायी महिला नहीं हैं, बल्कि-

>> एक आदर्श व्यक्ति

>> एक मार्गदर्शक

>> लाखों महिलाओं के लिए आशा की किरण

# जेन-जी तेजी से सीखना चाहती है

अगर संगठन जेन-जी को बनाए रखना चाहते हैं, तो उन्हें समझना होगा कि इस पीढ़ी को क्या प्रेरित करता है

संगठन में जेनरेशन-जेड (जेन-जी) की मौजूदगी तेजी से बढ़ रही है। यह पीढ़ी पूरी तरह डिजिटल माहौल, आर्थिक उतार-चढ़ाव और बड़े सामाजिक बदलावों के बीच पली-बढ़ी है। इसलिए उनका काम और करियर को देखने का नजरिया पुरानी पीढ़ियों से काफी अलग है। जेन जी के कर्मचारी व्यावहारिक सोच रखते हैं, तेजी से सीखना चाहते हैं और शुरुआत से ही बेहतर वेतन और जल्दी प्रमोशन की उम्मीद करते हैं। इसी कारण संगठनों के लिए यह जरूरी है कि वे समझें कि इस पीढ़ी के कर्मचारियों को किस तरह की कार्य-संस्कृति, अवसर और माहौल पसंद आता है, ताकि वे उनसे जुड़े रहें, प्रेरित महसूस करें और लंबे

समय तक संगठन के साथ बने रहें।

**नए सिरे से समझें**

जेन-जी चाहती है कि उनकी बात सुनी जाए और उनके मूल्यों को समझा जाए। इसलिए वे उन्हीं संगठनों में टिकती हैं, जो समाज पर सकारात्मक असर डालते हैं। संगठनों को नेतृत्व और काम करने के तरीकों में बदलाव लाना होगा। उन्हें कमांड कंट्रोल वाले मॉडल से हटकर लचीली, प्रोजेक्ट-



आधारित भूमिकाएं देनी होंगी। युवा कर्मचारियों को सीखने और समझने में मदद देने के लिए मेंटॉरशिप और गाइडेंस बढ़ानी होगी। सबसे महत्वपूर्ण, संगठन को यह दिखाना होगा कि उनका काम सिर्फ लाभ के लिए नहीं, बल्कि किसी बड़े उद्देश्य और समाज के लिए भी है।

**करियर ग्रोथ सिर्फ एक दिशा में न हो**

जेन-जी को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए संगठनों को पारंपरिक करियर मॉडल में बदलाव करना होगा। उनका मानना है कि करियर ग्रोथ केवल एक दिशा में न होकर, बल्कि कई रास्तों में आगे बढ़ने का मौका दे, जैसे उन्हें प्रोजेक्ट लीडरशिप और कौशल-आधारित प्रमोशन मिले। जेन-जी यह भी चाहती है कि उन्हें स्पष्ट रूप से पता हो कि उनका प्रमोशन, प्रदर्शन और असाइनमेंट किस आधार पर तय किए जा रहे हैं।

**पर्यावरण के अनुकूल वाली नीतियां**

जेन-जी तकनीक के साथ सहज है, लेकिन केवल डिजिटल इंटरैक्शन ही पर्याप्त नहीं है। वे व्यक्तिगत बातचीत, मानवीय संबंध और रिश्तों को भी उतनी ही अहमियत देती हैं। उनके लिए स्थिरता

(सस्टेनेबिलिटी) बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए संगठनों को केवल दिखाने के लिए नहीं, बल्कि सच में पर्यावरण के अनुकूल नीतियां अपनानी चाहिए, ताकि ऑफिस और काम करने का तरीका इको-फ्रेंडली हो।

**सभी को समान अवसर मिले**

जेन-जी चाहती है कि संगठन न केवल पर्यावरण, बल्कि समाज में भी वास्तविक प्रगति दिखाएं। वे समान अवसर और सभी को शामिल करने वाली नीतियों को महत्व देती हैं और सहयोगी, बराबरी वाले रिश्तों को पसंद करती हैं। इसलिए संगठनों को मेंटॉरिंग और काम करने के तरीकों में बदलाव करना चाहिए। जब संगठन उनकी अपेक्षाओं को समझकर सही कदम उठाते हैं, तो कार्यस्थल पर भरोसा बनता है और लंबे समय तक स्वस्थ और सार्थक संबंध बनते हैं।

## दबाव को अवसर में बदलें

जब निजी और पेशेवर संकट एक साथ आ जाएं, तो व्यर्थ का दबाव लेने के बजाय बेहतर होगा कि आप अपनी ऊर्जा समाधान ढूँढने में लगाएं

आज की तेज रफ्तार दुनिया में चुनौतियां अक्सर एक साथ आती हैं। कई बार निजी और पेशेवर मुश्किलें एक ही समय पर आने से तनाव बढ़ जाता है, सोचने-समझने की क्षमता कमजोर पड़ जाती है और सही निर्णय लेना कठिन हो जाता है। ऐसे समय में अगर हम व्यर्थ के दबाव में आ जाएं, तो हमारी कार्यक्षमता प्रभावित होती है और स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर पड़ सकता है। इसलिए समझदारी से कदम उठाना, भरोसेमंद लोगों और सहकर्मियों का समर्थन लेना और मजबूत सिस्टम बनाना बेहद जरूरी है। इससे न केवल मानसिक और पेशेवर स्थिरता बनी रहती है, बल्कि बेहतर प्रदर्शन करने और चुनौतियों का सामना करने में भी मदद मिलती है।

**परिस्थिति को स्वीकारें**

अक्सर हम मान लेते हैं कि निजी और पेशेवर जीवन को पूरी तरह अलग रखा जा सकता है, लेकिन वास्तव में एक क्षेत्र की परेशानी दूसरे को भी प्रभावित करती है। इसलिए पहला कदम है स्थिति को ईमानदारी से स्वीकार करना। यह समझें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। अपनी भावनाओं को पहचानने से ही समाधान



का मार्ग मिलता है। स्थिति स्वीकार करने से आपका प्रभाव कम नहीं होता, बल्कि भरोसा बढ़ता है और आप अपने तथा टीम दोनों के लिए एक मजबूत उदाहरण स्थापित करते हैं।

**खुद को रीसेट करें**

Harvard लिए थैरेपी लें, लंबी सैर पर जाएं या अपने व्यापार करीबियों के साथ समय बिताएं। अपने काम को Review मुश्किल समय में खुद को सर्वश्रेष्ठ साबित करने का दबाव न लें। इस दौर को जीवन का हिस्सा मानें और दोबारा तैयारी करने का अवसर समझें। मानसिक राहत के फिटर से व्यवस्थित करें, प्राथमिकताएं तय करें और अनावश्यक कार्यों को कम करें।

समझें कि जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। नियमित दिनचर्या, स्पष्ट सीमाएं और छोटे-छोटे रीसेट आपकी स्थिरता बनाए रखते हैं और टीम का भरोसा भी बढ़ाते हैं।

**मदद मांगना बुरा नहीं**

खासकर जब निजी और पेशेवर दोनों तरह के संकट एक साथ हों, तो आप सहकर्मियों या सीनियर्स से समर्थन ले सकते हैं। इसके लिए दो तरह से मदद मांगें, पहली रणनीतिक, जिसमें सीनियर्स से सलाह लेना, भूमिका में बदलाव पर बात करना या किसी बड़े प्रोजेक्ट में सहायता मांगना शामिल हो। दूसरी टेक्निकल, जिसमें टीम के किसी सदस्य को किसी प्रोजेक्ट की पूरी जिम्मेदारी देकर अपने काम का बोझ कम करें और उनकी क्षमता भी बढ़ाएं। याद रखें, मदद मांगना आगे बढ़ने का समझदारी भरा तरीका है।

**समय के अनुसार फैसले लें**

विपरीत परिस्थितियों में पता चलता है कि आपकी व्यक्तिगत क्षमता की सीमाएं क्या हैं। इसलिए हर जिम्मेदारी अकेले उठाना जरूरी नहीं है। मीटिंग्स में देखें कि फैसले सही स्तर पर लिए जा रहे हैं या नहीं। तय करें कि कौन-से निर्णय टीम ले सकती है और किन मुद्दों के लिए सीनियर स्तर की मदद चाहिए। साथ ही, काम के स्पष्ट मानक निर्धारित करें, ताकि अस्पष्टता कम हो।

## खुद को बेहतर बनाते चलें

अगर नई नौकरी ढूँढ रहे हैं, तो इस दौरान नए कौशल सीख कर आप खुद को बेहतर बनाना जारी रख सकते हैं। नई नौकरी में तलाश अक्सर पहाड़ चढ़ने जैसा लगता है, लेकिन जब आप समझ लेते हैं कि रास्ते में आने वाली बाधाओं को कैसे संभालना है, तो यही सफर आसान हो जाता है। सबसे पहले, अनिश्चितता और डर को कम करने के लिए यह तय करें कि आप किस दिशा में जाना चाहते हैं और उसके बारे में जानकारी जुटाएं, क्योंकि स्पष्टता हमेशा डर को छोटा कर देती है। इसके बाद, अगर आपको लगता है कि कुछ जरूरी कौशल आपके पास नहीं हैं, तो उन्हें छोटे कोर्स, प्रैक्टिस प्रोजेक्ट या सर्टिफिकेशन के जरिये पूरा करें। नेटवर्क की कमी को पूरा करने के लिए नए क्षेत्र के लोगों से बातचीत करें और किसी अनुभवी व्यक्ति से मार्गदर्शन लें। ऐसे छोटे-छोटे कदम आपको अनुभव के साथ आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

**स्पष्टता जरूरी है**

इस दौरान शुरुआत कहां से करें यह समझ न आना स्वाभाविक है। इसे दूर करने के लिए अपनी रुचियों, मूल्यों और ताकतों पर आत्म-चिंतन करें, जर्नलिंग करें और नए विकल्पों पर शोध करें। फिर छोटे कोर्स, वर्कशॉप या फ्रीलांस प्रोजेक्ट के जरिये अलग-अलग क्षेत्रों को आजमाएं। इससे आपको अपनी दिशा में स्पष्टता और आत्मविश्वास मिलता है।

**नए क्षेत्र के बारे में सीखते रहें**

नई नौकरी प्रवेश के लिए पुराने क्षेत्र को छोड़ने की चिंता, आत्म-संदेह या नए क्षेत्र के लिए

खुद को अयोग्य महसूस करना आम है। इसे दूर करने के लिए अपनी उपलब्धियों की सूची बनाएं, अपने स्थानांतरित होने योग्य कौशल पहचानें और खुद के प्रति दयालु रहें। नए क्षेत्र के बारे में सीखते रहें और अपनी सफलता की कल्पना करें।

**कौशल और ज्ञान**



अक्सर लगता है कि नई भूमिका के लिए हमारे पास जरूरी प्रशिक्षण या प्रमाण-पत्र नहीं हैं, लेकिन इसे छोटे कदम उठाकर आसानी से दूर किया जा सकता है। ऑनलाइन कोर्स, सर्टिफिकेट या स्वयंसेवा के जरिये धीरे-धीरे नए कौशल सीखें, और साथ ही यह समझें कि आपके मौजूदा कौशल भी नई भूमिका में उपयोगी हो सकते हैं।

**वित्तीय योजना बनाएं**

इस समय आय में कमी और पढ़ाई के खर्च को लेकर होने वाली चिंता स्वाभाविक है। इसे संभालने के लिए एक स्पष्ट वित्तीय योजना बनाएं, जरूरत पड़ने पर पार्ट-टाइम नौकरी के विकल्प देखें, और पढ़ाई से जुड़ी वित्तीय सहायता की जानकारी जुटाएं। इससे बदलाव का दबाव काफी कम हो जाता है।

**नेटवर्किंग के लिए अवसर तलाशें**

अगर आपके पास नए उद्योग में सही संपर्क नहीं हैं, तो अवसर पाना मुश्किल लग सकता है। इसे दूर करने के लिए नेटवर्किंग बढ़ाने के लिए उद्योग कार्यक्रमों में जाएं, लिंक्डइन पर पेशेवरों से जुड़ें, सलाहकारों से बात करें और लोगों से बातचीत के लिए अनुरोध करें। इससे आपको रेफरल और मौके मिलना आसान हो जाता है।

## सिर्फ अपने बारे में न सोचें



टीम को सफलता तभी मिलती है, जब आप केवल अपना फायदा न देखकर पूरी टीम की भलाई और लक्ष्य को प्राथमिकता दें

कार्यस्थल पर कुछ लोग सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। ऐसे लोग अपने फायदे को प्राथमिकता देते हैं, दूसरों के काम का श्रेय ले लेते हैं और ईमानदार प्रतिक्रिया से

बचते हैं। ऐसा माहौल भरोसा, सहयोग और संचार को कमजोर कर देता है, जिससे टीम का मनोबल कम होता जाता है और प्रदर्शन प्रभावित होने लगता है। लंबे समय में यह व्यवहार न केवल टीम की एकजुटता, बल्कि कंपनी की उत्पादकता के लिए भी हानिकारक साबित होता है। लीडर्स को ऐसे व्यवहार की पहचान कर समय रहते ही काबू पालना चाहिए, ताकि सहयोगी और सम्मानजनक कार्य वातावरण बन सके।

**अपेक्षाएं तय करें**

निरंतर संघर्ष, आपसी अविश्वास और कमजोर संचार टीम और परियोजना के प्रदर्शन को काफी घटा देते हैं, चाहे टीम कितनी ही कुशल क्यों न हो। ऐसी स्थिति सुधारने के लिए खुला और सम्मानजनक संवाद बढ़ाना, टीम के भीतर भरोसा बनाने वाले कदम उठाना और जरूरत पड़ने पर मध्यस्थता या टीम-बिल्डिंग गतिविधियों का सहारा

लेना उपयोगी होता है। इससे टीम का माहौल बेहतर होता है और प्रदर्शन दोबारा मजबूत हो सकता है।

**ताकि सुरक्षित माहौल बने**

आत्ममुग्ध व्यवहार टीम के सदस्यों में तनाव बढ़ाता है, नौकरी से संतुष्टि कम करता है और धीरे-धीरे उनका आत्म-सम्मान भी घटा सकता है। ऐसे में, लीडर को पारदर्शी संवाद को बढ़ावा देना चाहिए, कर्मचारियों को अपनी चिंताएं सुरक्षित माहौल में साझा करने का अवसर देना चाहिए और टीम लीडर को निष्पक्ष व सम्मानजनक व्यवहार अपनाना चाहिए। साथ ही, नियमित फीडबैक, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, और स्पष्ट सीमाएं तय करना कर्मचारियों का मनोबल वापस बढ़ाने में मदद करता है।

**खुले संवाद रखें**

यह व्यवहार रखने वाले लोग अक्सर दूसरों के विचारों को नजरअंदाज कर देते

हैं और काम को सही तरीके से सौंप नहीं पाते, जिसके कारण टीम की रचनात्मकता दब जाती है और संगठन की आगे बढ़ने की क्षमता सीमित हो जाती है। रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए लीडर को खुले संवाद को प्रोत्साहित करना चाहिए, टीम के हर सदस्य को अपने विचार साझा करने का समान मौका देना चाहिए और निर्णय-प्रक्रिया में विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना चाहिए।

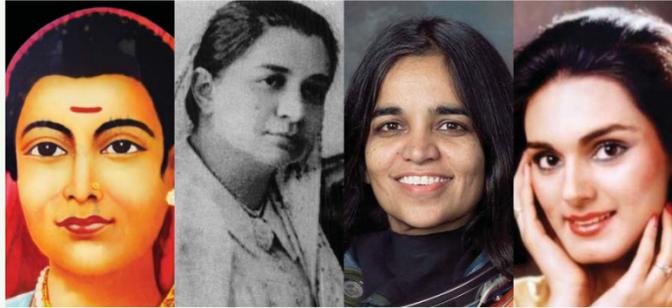
**सकारात्मक संस्कृति है जरूरी**

यदि आत्ममुग्ध व्यवहार को नहीं रोका जाए, तो यह टीम में खराब संस्कृति बना देता है, जिसे बाद में बदलना कठिन होता है। इससे बचने के लिए स्पष्ट नियम, जवाबदेही, सम्मान, त्वरित कार्रवाई और नियमित फीडबैक जरूरी हैं, ताकि भरोसेमंद कार्य-संस्कृति बनी रहे। यही प्रयास संगठन में दीर्घकालिक सहयोग और सकारात्मक माहौल सुनिश्चित करते हैं।

# भारतीय महिला सशक्तिकरण का इतिहास

भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा कोई नई नहीं है, बल्कि आधुनिकता में इसकी प्रासंगिकता प्राचीनता के प्रमाण में छिपी हुई है, जो निरन्तर स्त्री संघर्ष के परिवर्तन की गाथा को कहता है। यद्यपि समय-समय पर महिलाओं की स्थिति में उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, किंतु फिर भी वह सशक्तिकरण के तत्वों की गणना की योग्यता का विकास स्वयं में करती रही।

आज महिला सशक्तिकरण एव महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। महिला सशक्तिकरण क्या है, संबंध में इतिहास जानना आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण, महिलाओं की उस क्षमता से है, जिसमें वह महिला अपने निर्णय स्वयं ले सकती है। सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को राष्ट्र निर्माण में सर्वांगीण व बहुआयामी दृष्टिकोण से देखता है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी कहते हैं कि - 'देश की तरक्की के लिए हमें भारत में महिलाओं को सशक्त बनाना होगा।' ताकि महिलाओं को यथोचित सम्मान, स्थान व पद प्राप्त हो सकें। हालांकि महिलाओं के यथोचित सम्मान, स्थान व पद की अवधारणा प्राचीन वैदिक काल में देखी जा सकती है। जहां गाँगी, मैत्रेयी, लोपमुद्रा जैसी विदुषियाँ इसके सर्वोत्तम उदाहरण रहे हैं। जिन्होंने यज्ञ करने, वेदों का अध्ययन, और



निर्णय लेने का अधिकार को नारी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक के रूप में स्त्री की सम्मानजनक स्थिति का आदर्श प्रस्तुत किया है। पुरुषों के समान विकास की यह सहभागिता यथोचित बनी न रही। प्राचीन काल की अपेक्षा मध्यकाल में भारतीय महिलाओं की स्थिति में काफी गिरावट आई। लैंगिक असमानता ने पुरुषों के समान नारी समानता को बांध दिया। परिणामस्वरूप बालविवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसी सामाजिक रूढ़ियों ने स्त्री को अर्श से फर्श लाकर खड़ा कर दिया। अब पुरुष वर्चस्व की मनोग्रंथि का विकास अपने चरम पर उभर कर सामने आया। भले ही यह दौर पुरुषवादी रहा हो लेकिन मीराबाई, सहजोबाई, दयाबाई जैसी संत महिलाओं ने अपने सशक्त होने का परिचय इस युग में भी प्रस्तुत किया। जो आगे बढ़ते

हुए रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुलतान, नूरजहां, चांद बीबी, झलकारी बाई जैसी वीरांगनाओं के साहस में भी परिभाषित हुआ। आगे चलकर यह साहस 19वीं शताब्दी में सामाजिक सुधार आंदोलनों के रूप में उभरकर सामने आया। इस समय पुरुष वर्ग भी स्त्री की इस दयनीय स्थिति को लेकर आहत रहा। विशेषकर राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने प्रार्थना समाज (1867) की स्थापना की और सती प्रथा, बालविवाह का विरोध कर विधवा विवाह का समर्थन किया। इसी समय ज्योतिबा फूले व सावित्रीबाई फूले दोनों ने मिलकर सत्यशोधक समाज (1873) की स्थापना बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की। फातिमा शेख जैसी मुस्लिम महिला भी सामने आयी। जिसने स्त्री शिक्षा हेतु

स्वदेशी पुस्तकालय की स्थापना की। द-हार्ड-कास्ट इंडियन वूमन जैसी पुस्तक लिखने वाली महान संस्कृतविद् पंडिता रमाबाई ने भी आर्य महिला समाज (1851), शारदा सदन (1889), मुक्ति मिशन जैसी संस्थाओं की स्थापना कर महिलाओं को शिक्षा व सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। महिलाओं के प्रति उत्थान की यह भावना स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की अग्रणी भूमिका से आंकी जा सकती है। जिसमें सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली जैसी महिलाओं ने आंदोलन व सत्याग्रह किये। जेल की यात्राओं के माध्यम से महिलाओं की सक्रिय भूमिका को सामने रखा। इस सशक्त भूमिका ने स्वतंत्र भारत में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित कर दिया। गांधी जी ने कांग्रेस में महिला नेतृत्व को प्रोत्साहन दिया और हरिजन पत्रिका (1936) में कहा कि स्त्री इतनी सशक्त हो जाए कि 'अपने पति को भी न कहने में संकोच न हो।' डॉ. अम्बेडकर ने भी स्त्री की सहभागिता को हिन्दू कोड बिल (1950) के रूप में सामने रखा। जिसमें महिलाओं को समानता का अधिकार, मताधिकार, शिक्षा व रोजगार जैसे अवसरों को 14, 15, 16 जैसे अन्य अनुच्छेदों में विभाजित कर संविधान के पटल पर अंकित कर दिया। आज वर्तमान सरकार

संविधान के लिखित दस्तावेजों के आधार पर ही स्त्री सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, महिला स्वयं सहायता समूह, उज्वला योजना, नारी शक्ति वंदन अधिनियम (106वां संशोधन, 2003) के तहत पंचायती राज व शहरी निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत तक का आरक्षण महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रहा है। यद्यपि संविधान में इतना प्रावधान होने के बाद भी महिलाओं को लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, अशिक्षा व आर्थिक निर्भरता के कारण कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, किंतु फिर भी ऐतिहासिक संघर्ष व उपलब्धियों से भरा यह महिला सशक्तिकरण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, सोनिया गांधी, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, ममता बनर्जी, मायावती, आईपीएस किरण बेदी व्यापार जगत में रोशनी नादर मल्होत्रा, किरण मजूमदार-शॉ (बायोफॉर्म), फाल्गुनी नायर (नायका), और नीता अंबानी, फिल्मि जगत में प्रियंका चोपड़ा, ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन, कंगना रनौत आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी शिक्षा, जागरूकता व बेहतर कार्यशीलता को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में असाधारण नेतृत्व और नवाचार के साथ भारतीय महिला सशक्तिकरण को वैश्विक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया।

## नारी तुम केवल श्रद्धा हो

- कवि जयशंकर प्रसाद



'क्या कहती हो ठहरो नारी!  
संकल्प अश्रु-जल-से-अपने।  
तुम दान कर चुकी पहले ही  
जीवन के सोने-से सपने।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो  
विश्वास-रजत-नग पागतल में।  
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो  
जीवन के सुंदर समतल में।

देवों की विजय, दानवों की  
हारों का होता-युद्ध रहा।  
संघर्ष सदा उर-अंतर में जीवित  
रह नित्य-विरुद्ध रहा।

आँसू से भीगे अंचल पर  
मन का सब कुछ रखना होगा-  
तुमको अपनी स्मित रेखा से  
यह संधिपत्र लिखना होगा।

## आपकी उम्र, पेशा या सामाजिक भूमिका कुछ भी हो, अपने भीतर नई चीजों को जानने की इच्छा सदैव बनाए रखें

जब हम अपने आसपास किसी नई या अलग चीज को देखते हैं, तो मन स्वतः ही सवाल करने लगता है कि यह क्या है, ऐसा क्यों है, और इसके पीछे क्या कहानी है। यही सवाल पूछने की प्रवृत्ति जिज्ञासा कहलाती है, जो उम्र, पेशा या भूमिका से परे हर इन्सान के भीतर होती है। जिज्ञासा का दायरा केवल जानकारी पाने तक सीमित नहीं होता। यह हमें लोगों और परिस्थितियों को गहराई से समझने का अवसर देती है और उनकी सोच, अनुभव, संवेदनाओं और मूल्यों से जुड़ने का रास्ता खोलती है। ऐसी जिज्ञासा मानसिकता न सिर्फ सीखने और नवाचार को बढ़ावा देती है, बल्कि अनावश्यक मानसिक थकान और तनाव से भी बचाती है।

### खुद से सवाल करें

कई बार किसी बात का उत्तर न होना ही जिज्ञासा को और गहरा कर देता है। ऐसे में मुझे नहीं पता कहना कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी है। यह बौद्धिक विनम्रता को दर्शाता है, यानी यह स्वीकार करना कि हर सवाल का जवाब हमारे पास नहीं होता। जब हम यह मान लेते हैं, तो हमारा अहं कम होता है और दूसरों से सीखने की गुंजाइश बढ़ती है। हर बात जानने का दिखावा करने के बजाय यदि हम खुद से यह पूछें कि मैं इसे और बेहतर

## जिज्ञासा को बनाए रखें



कैसे समझ सकता हूँ, तो न केवल सहयोग की भावना बढ़ती है, बल्कि बेहतर समाधान भी सामने आते हैं।

### जानने की भावना

जब कोई व्यक्ति आपसे कोई नई या अलग बात

साझा करता है और आप उससे कहते हैं, 'इसके बारे में थोड़ा और बताइए' तो यह साफ संकेत होता है कि आप सच में उसकी बात समझना चाहते हैं। ऐसी प्रतिक्रिया सामने वाले को सुना-समझा महसूस कराती है। इस और रचनात्मक सोच को भी बढ़ावा देता है, जिससे बेहतर नतीजे सामने आते हैं।

### अलग पृष्ठभूमि के लोगों से मिले

आमतौर पर हम सलाह उन्हीं लोगों से करते हैं, जिन्होंने जीवन में कुछ मुकाम हासिल किया हो या अपने क्षेत्र में अच्छे कर रहे हों, क्योंकि हमें लगता है कि वही सही दिशा दिखा पाएंगे। उनका अनुभव उपयोगी होता है, लेकिन वह अक्सर एक ही क्षेत्र तक सीमित रहता है। यदि आप अलग-अलग पृष्ठभूमि और क्षेत्रों के लोगों से बातचीत करते हैं, तो आपकी सोच में नई दृष्टि और विविधता आती है।

### सीखने का तरीका जानें

हर व्यक्ति जानकारी हासिल करने और चीजों को समझने का अपना अलग तरीका रखता है। सबसे पहले यह पहचानना जरूरी है कि आप किस तरह सीखते और समझते हैं-सुनकर, देखकर, सवाल पूछकर या अनुभव से। जब यह स्पष्ट हो जाता है, तो आप सही लोगों से जुड़ पाते हैं और आपका नेटवर्क स्वाभाविक रूप से मजबूत होता है। साथ ही, इसका असर पेशेवर जीवन के साथ निजी जीवन में भी बेहतर समझ बनाते हैं।

# हर बदलाव के लिए तैयार रहें

सिर्फ यह कहना काफी नहीं कि मैंने बदलती स्थितियों से तालमेल बैठा लिया है, ऐसा होते हुए दिखना भी चाहिए

एआई, ऑटोमेशन और लगातार बदलती परिस्थितियों के कारण आजकल काम करने का तरीका भी तेजी से बदल रहा है। ऐसे समय में लीडर के लिए सबसे जरूरी गुण है अनुकूलनशीलता, यानी हालात के अनुसार खुद को बदलने की क्षमता। अब सिर्फ अच्छे नतीजे या टारगेट पूरे करना काफी नहीं है। सही लीडर वे होते हैं, जो बदलाव के बीच भी सही फैसले लेते हैं, दबाव में शांत रहते हैं और नए तरीकों को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं। समस्या यह है कि कई लोग खुद को अनुकूलनशील कहते हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसे अपने रोज के काम में दिखा पाते हैं। सिर्फ कहना नहीं, बल्कि अपने व्यवहार, बातचीत, मीटिंग्स और



फैसलों से इसे साबित करना जरूरी होता है। यहां कुछ बताए गए तरीके इसी पर केंद्रित हैं कि आप अपने दैनिक कामकाज के जरिये खुद को एक अनुकूलनशील और आधुनिक लीडर कैसे दिखा सकते हैं।

## लगातार सीखने वाला बनें

एआई और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे बदलावों के दौर में निरंतर सीखना जरूरी हो गया है। आगे बढ़ने के लिए लीडर्स को समझना चाहिए कि नई तकनीकें उनकी टीम और संगठन को कैसे प्रभावित करेंगी। इसके लिए टीम के ज्ञान का व्यवस्थित आकलन करना उपयोगी होता है, जिससे भविष्य में जरूरी

कौशल और सुधार के क्षेत्र पहचाने जा सकें। यह दर्शाता है कि आप टीम के दीर्घकालीन विकास को महत्व देते हैं। अच्छे लीडर जानबूझकर फीडबैक लेते हैं, टीम को कोचिंग देते हैं और खुद के विकास में निवेश करते हैं। आखिर में, लगातार सीखने वाले लीडर बदलाव के साथ खुद को ढाल ही लेते हैं।

## समाधान की दिशा निकालें

परियोजनाओं का असफल होना या अच्छे कर्मचारियों का कंपनी छोड़ना आम है, लेकिन ऐसे समय में लीडर की प्रतिक्रिया सबसे महत्वपूर्ण होती है। अनुकूलनशील लीडर अनिश्चितता को खतरे के बजाय मिलकर सुलझाई जाने वाली चुनौती मानते हैं और शांति के साथ समाधान की दिशा दिखाते हैं। उनकी सोच भविष्य और बदलाव पर केंद्रित होती है, इसलिए वे आगे बढ़ने वाली भाषा का उपयोग करते हैं। बदलाव से जुड़ी पहलों में सक्रिय भागीदारी और टीम से खुला संवाद भरोसा पैदा करता है

## सहानुभूति दिखाते चले

सहानुभूति और जवाबदेही एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक अच्छे नेतृत्व की दो मजबूत बुनियाद हैं। प्रभावी लीडर टीम की परेशानियों और थकान को समझते हुए भी काम समय पर और सही तरीके से पूरा करवाता है। जब लीडर यह कहता है कि वह बदलाव की मुश्किलों को समझता है और टीम के साथ खड़ा है, साथ ही जिम्मेदारियां स्पष्ट रखता है, तो टीम सुरक्षित भी महसूस करती है और बेहतर प्रदर्शन भी करती है। बदलाव के समय शांत रहना, टीम की बात ध्यान से सुनना और खुद सीखते रहना नेतृत्व को मजबूत बनाता है। नई तकनीकों या कौशल, जैसे एआई, को सीखने की पहल करना भी टीम का सही मार्गदर्शन करने में मदद करता है। याद रखें, सहानुभूति टीम को जोड़ती है और जवाबदेही उसे आगे बढ़ाती है, जो लीडर इन दोनों का संतुलन बनाते हैं, वहीं बड़े नेतृत्व के लिए तैयार होते हैं।

## 'सफलता से अधिक मूल्यवान बनना ही सच्ची उपलब्धि है' अल्बर्ट आइंस्टीन के विचारों को आत्मसात करती डॉ. निशा शर्मा बनी आदर्श महिला महाविद्यालय की पहली महिला प्रोफेसर

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द - 'सफल व्यक्ति बनने का प्रयास मत कीजिए, बल्कि मूल्यवान व्यक्ति बनने का प्रयास कीजिए' - डॉ. निशा शर्मा के संपूर्ण व्यक्तित्व, कार्यशैली और शैक्षणिक यात्रा पर पूर्णतः सार्थक प्रतीत होते हैं। इन्हीं मूल्यों को आत्मसात करते हुए डॉ. निशा शर्मा ने शिक्षा जगत में एक सशक्त, प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय पहचान स्थापित की है। महाविद्यालय के लिए यह अत्यंत गौरव एवं ऐतिहासिक क्षण है कि डॉ. शर्मा महाविद्यालय की पहली महिला प्रोफेसर बनी हैं। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय प्रबंधन समिति, प्राचार्या, आई.क्यू.ए.सी., शिक्षक एवं गैर-शिक्षक स्टाफ सदस्यों द्वारा उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं।

डॉ. निशा शर्मा ने 19 नवम्बर 2008 को आदर्श महिला महाविद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु ज्वाइन किया।

महाविद्यालय में उनकी सेवाओं को अब लगभग 17 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इससे पूर्व वे विद्यालय स्तर पर भी कार्यरत रही हैं, जहाँ से उन्होंने शिक्षण की सुदृढ़ नींव रखी। वर्ष 2008 से वे महाविद्यालय के विज्ञान संकाय, विशेष रूप से भौतिक विज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत रहीं। वर्तमान में वे विज्ञान संकाय की कोऑर्डिनेटर के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रही हैं।

डॉ. निशा शर्मा की शैक्षणिक यात्रा अत्यंत प्रेरणादायी रही है। उन्होंने कक्षा 5वीं से 10वीं तक की शिक्षा होली हार्ट पब्लिक स्कूल, हिसार से प्राप्त की। इसके उपरांत 11वीं से बी.एससी. (इलेक्ट्रॉनिक्स) की शिक्षा डी.एन.पी.जी. कॉलेज, हिसार से तथा एम.एससी. (भौतिकी) की उपाधि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से प्राप्त की। विवाह के पश्चात उन्होंने जे.जे.टी.यू. से पीएच.डी.



की उपाधि अर्जित की।

डॉ. निशा शर्मा ने अपनी इस सफलता का श्रेय सर्वशक्तिमान ईश्वर, अपने माता-पिता, गुरुओं, परिवार एवं

मित्रों को दिया। साथ ही उन्होंने महाविद्यालय प्रबंधन, प्राचार्या, शिक्षण व गैर-शिक्षण सहयोगियों तथा विद्यार्थियों के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया, जिनके सहयोग एवं प्रेरणा से वे निरंतर आगे बढ़ती रहीं।

प्रोफेसर के रूप में अपने उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ. निशा शर्मा ने कहा कि उनका प्राथमिक लक्ष्य विद्यार्थियों को केवल विषयगत ज्ञान देना ही नहीं, बल्कि उनमें आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक समझ और जीवन कौशल का विकास करना है, जिससे वे एक जटिल और प्रतिस्पर्धी विश्व में सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकें। यह यात्रा समर्पण, मार्गदर्शन, नेतृत्व और शैक्षणिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण रही है।

उल्लेखनीय है कि प्रोफेसर पद तक पहुंचने की यह यात्रा सहायक प्राध्यापक (सीनियर स्केल, सेलेक्शन ग्रेड) से

प्रारंभ होकर एसोसिएट प्रोफेसर जैसे विभिन्न शैक्षणिक पदों से होकर गुजरती है। इसमें वर्षों का अध्यापन अनुभव, शोध कार्य, पुस्तकों का प्रकाशन, यूजीसी केयर सूचीबद्ध प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन, सेमिनार, कॉन्फ्रेंस एवं कार्यशालाओं में शोध पत्र प्रस्तुति, महाविद्यालय की पाठ्यक्रम एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता तथा डीजीएचई/विश्वविद्यालय स्तर की अकादमिक परिषदों में विशेषज्ञता जैसी उपलब्धियां सम्मिलित होती हैं।

डॉ. निशा शर्मा की यह उपलब्धि न केवल आदर्श महिला महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है, बल्कि यह विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए भी यह संदेश देती है कि सच्ची सफलता वही है, जो शिक्षा और समाज को वास्तविक मूल्य प्रदान करे।

## छात्राओं के सर्वांगीण विकास का सशक्त केंद्र बना आदर्श महिला महाविद्यालय

महाविद्यालय केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि छात्राओं के सर्वांगीण विकास का सशक्त केंद्र है। यहां शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को विशेष महत्व दिया जाता है। इसी प्रेरक वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर आज अनेक छात्राएं अपने-अपने क्षेत्र में सफलता की ओर अग्रसर हैं। प्रस्तुत साक्षात्कार में हम आदर्श महिला महाविद्यालय की पास-आउट छात्राओं से संवाद कर रहे हैं, जिन्होंने अपने महाविद्यालयीन जीवन के अनुभव, शैक्षणिक परिवेश, अध्यापिकाओं के मार्गदर्शन और संस्थान से मिली सीख को सहजता और गर्व के साथ साझा किया है। यह बातचीत न केवल वर्तमान छात्राओं के लिए प्रेरणास्रोत है, बल्कि यह दर्शाती है कि किस प्रकार एक सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**प्रश्न 1: आदर्श महिला महाविद्यालय में प्रवेश लेने का आपका निर्णय कैसे और किन अपेक्षाओं के साथ हुआ था?**

**उत्तर:** मैंने आदर्श महिला महाविद्यालय में प्रवेश इसलिए लिया क्योंकि यह संस्थान शिक्षा के साथ-साथ खेल और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों पर भी विशेष ध्यान देता है। मेरी अपेक्षा थी कि यहां मुझे एक सुरक्षित, अनुशासित और गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण मिलेगा, जो पूरी तरह सही साबित हुआ।

**प्रश्न 2: महाविद्यालय में बिताए गए वर्षों में आपका समग्र अनुभव कैसा रहा?**

**उत्तर:** मेरा अनुभव अत्यंत सकारात्मक और सीख से भरपूर रहा। यहां बिताया हर वर्ष मेरे व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और सोच को निखारने वाला रहा।

**प्रश्न 3: यहां का शैक्षणिक वातावरण आपके सीखने की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करता रहा?**

**उत्तर:** महाविद्यालय का शांत, अनुशासित और प्रेरणादायक वातावरण पढ़ाई के लिए अत्यंत अनुकूल रहा, जिससे विषयों को समझना और लक्ष्य पर केंद्रित रहना आसान हुआ।

**प्रश्न 4: महाविद्यालय की पढ़ाई**



**KHUSHI SHARMA**  
B.Com Computer



**TANIYA JINDAL**  
B.Com Computer



**LAVANYA SHARMA**  
B.Com Pass Course



**CHITRA**  
B.Sc Non Medical



**TWINKLE**  
B.A.



**NANCY**  
B.Sc Non Medical



**RACHNA**  
B.A.



**KRITIKA**  
BCA

**पद्धति को आप किस रूप में देखती हैं?**

**उत्तर:** यहां पढ़ाई की पद्धति सैद्धांतिक ज्ञान और व्यवहारिक समझ का संतुलित संयोजन है, जिससे विषय केवल परीक्षा तक सीमित नहीं रहते, बल्कि जीवन में भी उपयोगी बनते हैं।

**प्रश्न 5: अध्यापिकाओं की भूमिका आपके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में कितनी महत्वपूर्ण रही?**

**उत्तर:** अध्यापक हमारे लिए केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और अभिभावक की तरह रहे। उनके सहयोग और मार्गदर्शन ने मुझे आत्मविश्वासी और अनुशासित बनने में मदद की।

**प्रश्न 6: क्या कोई ऐसा शिक्षक या शिक्षिका है, जिनसे आपको विशेष प्रेरणा मिली हो?**

**उत्तर:** हां, कई शिक्षिकाएं हैं जिन्होंने मुझे न केवल पढ़ाई बल्कि जीवन मूल्यों की भी सीख दी। उनकी प्रेरणादायक सोच

और सरल व्यवहार हमेशा स्मरणीय रहेगा।

**प्रश्न 7: कक्षा के बाहर भी अध्यापिकाओं का मार्गदर्शन आपको किस तरह प्राप्त हुआ?**

**उत्तर:** कक्षा के बाहर भी अध्यापकों ने करियर, प्रतियोगी परीक्षाओं और व्यक्तिगत समस्याओं पर हमेशा मार्गदर्शन दिया, जिससे हमें सही दिशा मिली।

**प्रश्न 8: महाविद्यालय में आयोजित शैक्षणिक गतिविधियों से आपको क्या लाभ मिला?**

**उत्तर:** सेमिनार, कार्यशालाएं और व्याख्यानो से हमारे ज्ञान का विस्तार हुआ और हमें आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने का अवसर मिला।

**प्रश्न 9: छात्राओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने में महाविद्यालय की क्या भूमिका रही?**

**उत्तर:** महाविद्यालय ने छात्राओं को निर्णय लेना, नेतृत्व करना और अपने अधिकारों

के प्रति जागरूक होना सिखाया, जिससे हम आत्मनिर्भर बनीं।

**प्रश्न 10: सहपाठियों के साथ आपके अनुभव कैसे रहे?**

**उत्तर:** सहपाठियों के साथ मेरा अनुभव बहुत ही सहयोगात्मक और सकारात्मक रहा। आपसी सहयोग और मित्रता ने पढ़ाई को और भी आनंददायक बनाया।

**प्रश्न 11: महाविद्यालय की अनुशासन व्यवस्था पर आपका क्या दृष्टिकोण है?**

**उत्तर:** अनुशासन व्यवस्था सख्त होने के साथ-साथ सकारात्मक भी रही, जिसने हमें समय प्रबंधन और जिम्मेदारी का महत्व सिखाया।

**प्रश्न 12: पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों में भागीदारी का अनुभव कैसा रहा?**

**उत्तर:** सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों ने मेरे भीतर छिपी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर दिया और

आत्मविश्वास बढ़ाया।

**प्रश्न 13: आदर्श महिला महाविद्यालय ने आपके करियर में कैसे सहयोग किया?**

**उत्तर:** यहां मिली शिक्षा और मार्गदर्शन ने मुझे अपने करियर को लेकर स्पष्टता दी और आगे बढ़ने का आत्मविश्वास प्रदान किया।

**प्रश्न 14: वर्तमान छात्राओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?**

**उत्तर:** मैं यही कहना चाहूंगी कि वे शिक्षा का पूरा लाभ लें, अनुशासन का पालन करें और अपने सपनों को साकार करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

**प्रश्न 15: अंत में, आदर्श महिला महाविद्यालय को आप किन शब्दों में याद रखेंगी?**

**उत्तर:** आदर्श महिला महाविद्यालय मेरे जीवन की मजबूत नींव है, जिसने मुझे एक सशक्त, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा दी।